© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 09 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

इक्कीसवीं सदी और नारी का बदलता रूप

डॉ. नीलम, सहायक प्राध्यापक, हिन्दू कन्या महाविद्यालय, जीन्द।

9 772278 684800 03
© IJRPS International Journal for Research Publication & Seminar

आधुनिक जीवन, बढ़ता हुआ शहरीकरण, शिक्षा, विज्ञान, तंत्र–ज्ञान आदि ने नारी के जीवन पर भी प्रभाव डाला है। नारी में अपने स्व को लेकर जागरुकता एवं अस्तित्व बोध निर्माण हुआ है। आज की नारी हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर निर्भीक होकर बड़ी कुशलतापूर्वक कार्य कर रही है। वह हर क्षेत्र में अच्छे से अच्छे परिणाम दे रही है। विकास और प्रगतिशीलता के इस दौर में नारी केवल पृथ्वी तक ही सीमित नहीं है। उसने अंतरिक्ष तक बड़ी कुशलता एवं साहस के साथ पुरुष के साथ कंधा से कंधा मिलाकर कार्य किया है, कर रही है। नारी के इस बदलते स्वरूप एवं जागरुकता का प्रभाव हर क्षेत्र में पड़ा है। इक्कीसवीं सदी के जागरुक युग में नारी स्वयं को सफल बनाने की चेष्टा में है। शिक्षित नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग है। इसी सजगता को पुष्पा सक्सेना ने अपनी कहानी 'सच' में दिखाया है जिसमें बिन्नी के पढाई पूरी कर अमेरिका जाने की बात जब उसकी माँ का दिल दहला देती है तो सुमती देवी बिन्नी की माँ शारदा को समझाती हुई कहती है –

''उसका अपना भविष्य है शारदा, उसे जाने दे। शादी के बाद भी क्या मिल पाता है ?[1]

पुष्पा सक्सेना की कहानी 'तंत्तापानी' में भी अनु जो कि उच्च शिक्षित प्रतिभाशाली नारी है और जब अनु इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए शिमला जाना चाहती है तो उसकी दादी विरोध करती है तो उसकी माँ अनु के पिता को उसके विदेश जाने की बात पर समझाती है–

Note :For Complete paper/article please contact us info@jrps.in

Please don't forget to mention reference number , volume number, issue number, name of the authors and title of the paper

[1] हंस पत्रिका, जनवरी 1998, राजेन्द्र यादव, पृ॰ 311